16

सेठ सुदर्शन की कथा

अंग देश में चम्पा नगरी का राजा गजवाहन था। वह अत्यन्त सुन्दर तथा बहादुर था। उसने अपने समस्त शत्रुओं को हराकर अपना राज्य निष्कंटक बना लिया था। गजवाहन की राजधानी में एक वृषभदत्त नाम का सेठ रहता था। उसकी अर्हदासी नाम की स्त्री थी। वह शीलवती थी। सेठ को अपनी स्त्री के प्रति अत्यन्त प्रेम था। इस प्रकार दोनों का दाम्पत्य जीवन आनन्द से व्यतीत हो रहा था।

सेठ के यहाँ एक सुभग ग्वाला नोकर था। एक दिन एक घटना बनी, जिससे उस ग्वाले के जीवन में महान परिवर्तन आ गया। घटना यह थी कि ग्वाला जंगल से अपने घर आ रहा था कि उसने मार्ग में शिला के ऊपर एक मुनिराज को ध्यानस्थ देखा। दिन अस्त होने का समय हो रहा था और सर्दी के दिन थे। ग्वाले ने विचार किया कि सर्दी के दिनों में शिला के ऊपर एक भी वस्त्र बिना मुनिराज रात्रि किस प्रकार व्यतीत करेंगे ? दयाभाव से प्रेरित होकर वह अपने घर गया और अपनी स्त्री से मुनिराज का समस्त वृतान्त कह सुनाया। तत्पश्चात् ग्वाला मुनिराज के समीप गया। उसने देखा कि मुनिराज का सम्पूर्ण शरीर सर्दी में ओस से भीग रहा था, परन्तु मुनिराज उसी शिला पर अन्तर्लीन होकर ध्यान में बैठे थे। उस ग्वाले ने भक्तिभाव से प्रेरित होकर ओंस से भीगे हुए उनके शरीर को वस्त्र से साफ किया। इस प्रकार ग्वाले ने सम्पूर्ण रात्रि मुनिराज की सेवा में व्यतीत की। प्रभात होते ही मुनिराज ध्यान में से बाहर आये। मुनिराज ने ग्वाले को भक्तिभाव से सेवा में रत्त देखकर पवित्र पंच नमस्कार मंत्र दिया। जिसको प्राप्त करके मनुष्य स्वर्ग मोक्ष के समस्त सुखों को प्राप्त करता है। मुनिराज भी मंत्रोच्चार करते हुए आकाशमार्ग से विहार कर गये।

यहाँ ग्वाला णमोकार मंत्र का निरन्तर स्मरण करता है। सोते-जागते, उठते-बैठते णमोकार मंत्र का जाप करने लगा। वह किसी भी कार्य का प्रारम्भ करने से पूर्व पवित्र मंत्र की आराधना करता। इस प्रकार वह मंत्र उसके रोम-रोम में समा गया। एक दिन सेठ वृषभदत्त

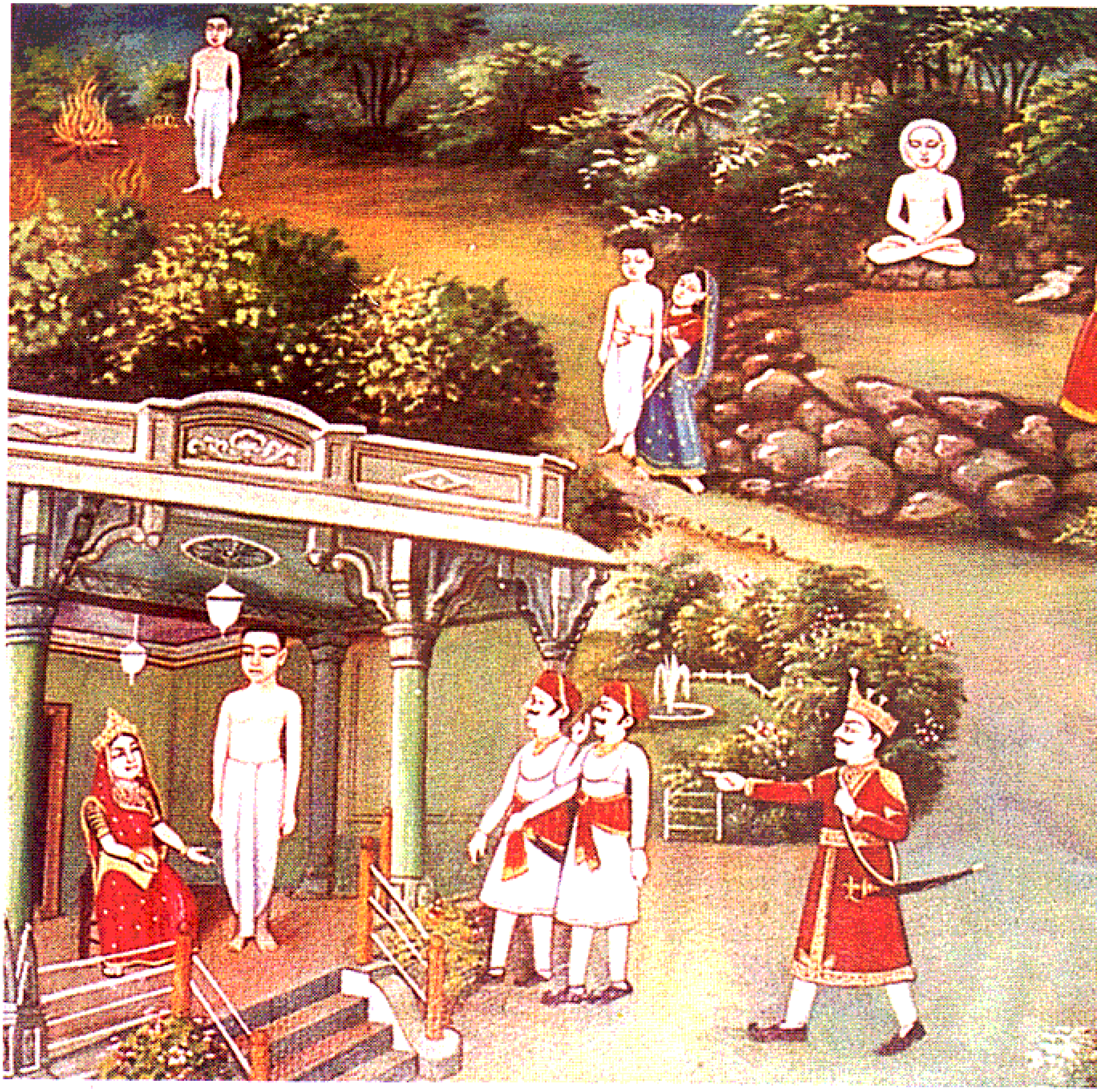

ने ग्वाले को मंत्र बोलते सुन लिया। मंत्र प्राप्ति के विषय में सेठजी ग्वाले से पूछने लगे। ग्वाले ने मुनिराज के पास से मंत्र प्राप्ति का सम्पूर्ण वृतांत उन्हें कह सुनाया। सेठ वृषभदत्त ने प्रसन्न होकर कहा कि तेरा जीवन धन्य है ! तेरा अहोभाग्य है कि तुझे मुनिराज के दर्शन हुए! कि जिनकी पूजा त्रिभुवन में होती है।

एक दिन एक धटना बनी। उस ग्वाले की गायें नदी पार करने लगी, ग्वाला भी पंच नमस्कार मंत्र का स्मरण करके नदी में कूद पड़ा। वर्षा के कारण नदी भरपूर जल से भरी थी। दुर्भाग्य कहो या संयोग उसके नदी में कूदते ही एक अणिदार (नुकीली) लकड़ी ग्वाले के पेट में घुस गई जिससे उसका पेट फट गया और उसकी मृत्यु हो गई। पवित्र मंत्र के प्रभाव से वह स्वर्ग में जाता; परन्तु उसने अपने मन में सेठ वृषभदत्त का पुत्र होने की इच्छा की थी। फलस्वरुप वह ग्वाला मरकर सेठ के यहाँ पुत्र हुआ, जिसके होने पर सेट वृषभदत्त की बहुत उन्नति हुई। उसकी प्रतिष्ठा, धन, वैभव तथा सम्पत्ति में बहुत वृद्धि हुई। उसका नाम सुदर्शन रखा गया।

कुछ समय बाद सुदर्शन युवा होने लगा। उसी नगरी में सागरदत्त नाम का सेठ रहता था। उसकी स्त्री का नाम सागरसेना था। उसकी मनोरमा नाम की सुन्दर पुत्री थी। उसके साथ सुदर्शन का विवाह हुआ। अब सुदर्शन ने गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया। वह युगल जोड़ी आनन्द से जीवन व्यतीत करने लगी।

एक दिन सेठ वृषभदत्त समाधिगुप्त नामक मुनिराज के दर्शन करने के लिये गया। वह मुनिराज के उपदेश से इतना प्रभावित हुआ कि वह समस्त धन, वैभव, परिग्रह को छोड़कर दीक्षा लेकर तपस्वी हो गया। अब सुदर्शन पर घर-गृहस्थी और परिवार का सम्पूर्ण भार आ पड़ा। सुदर्शन की प्रसिद्धि होने लगी। राज-दरबार, सर्व साधारण सभी उसे बहुत चाहने लगे। सुदर्शन भी कुशलता से सांसारिक कार्य करता था। साथ ही साथ वह जिनेन्द्र भगवान की भक्ति में अपना अधिकांश समय बिताने लगा। तभी से उसकी गिनती धार्मिक पुरुषों में होने लगी। सभी उसके सदाचार, श्रावक व्रत-विधान का तथा दान, पूजादि कार्यों की प्रशंसा करने लगे। वह भी ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके सदाचार पूर्ण जीवन व्यतीत करता था। इससे राज दरबार में भी उसकी प्रशंसा होने लगी। मगधापति उसे बहुत सम्मान देते थे।

सुदर्शन के कपिल नाम का एक ब्राह्मण मित्र था और वह राजा दतिवाहन (राजवाहन) का पुरोहित था। उसकी पत्नी का नाम कपिला था। वह सुदर्शन के रूप, गुण पर मोहित थी।

एक दिन कपिला ने षड़यंत्र रचकर अपनी दासी को सुदर्शन के पास भेजा और कहलवाया कि तुम्हारे अभिन्न हृदय (मित्र) कपिल ने विशेष रूप से घर मिलने के लिये बुलाया है।

दासी के कहने से सुदर्शन कपिल के घर गया। कपिला ने कहा कि वह बाहर गया है, परन्तु मेरी बात सुनो ! मैं तुम्हारे रूप-गुण पर मोहित हुँ, इसलिये मेरा मनोरथ पूर्ण करो! यदि तुम मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं करोगे तो मैं तुम्हें अभी ही मरवा दूंगी। - ऐसा कहकर वह मूर्खा सुदर्शन से आलिंगनादि करने लगी। ऐसा करते देख सेठ सुदर्शन उससे कहने लगा कि क्या तुम्हें पता नहीं है कि मैं नपुंसक हूँ ? यह सुनकर कपिला उससे विरक्त हुई और उसे घर जाने दिया।

एक दिन महाराज सुदर्शन के साथ बगीचे में घूम रहे थे। महाराज गजवाहन की रानी भी साथ थी। सेठ सुदर्शन का रूप-सौन्दर्य देखकर रानी उस पर मोहित हो गई। उसने अपनी दासी के द्वारा सेठ सुदर्शन की पूछ परख की। दासी ने हाथ जोड़कर कहा- महारानी! वह हमारी नगरी के प्रधान सेठ का पुत्र है उसका नाम सुदर्शन है। रानी ने कहा कि यह तो बहुत आनन्द की बात है कि सुदर्शन राज्यरत्न है। परन्तु उसका सौन्दर्य अपूर्व है। मैंने आज तक ऐसा सुन्दर पुरुष नहीं देखा है। उसको देखते ही मेरा मन आकर्षित हो गया है। मुझे भ्रम है कि स्वर्ग का देव भी इतना सुन्दर होगा क्या ? अच्छा, तू ही कह कि सेठ कैसा लगता है? क्या तूने उसके जैसा दूसरा सुन्दर पुरुष देखा है ? दासी ने कहा कि महारानीजी ! तुम्हारा अनुमान सत्य है। पृथ्वी पर तो क्या सम्पूर्ण त्रिभुवन में भी उसके समान सुन्दर युवक नहीं मिलने वाला है। वह सचमुच ही सुन्दर पुरुषों का सिरताज है।

रानी ने दासी को अपने अनुकूल जानकर कहा कि तू मेरा एक काम कर सकेगी? सत्य मान, मैं तुझे अपनी अन्तरंग दासी मानकर कहती हूँ, यह बात किसी के सामने प्रकट न हो जाये। दासी ने कहा कि मैं तो तुम्हारी दासी हूँ, क्या आज्ञा है कहो ? मैं कार्य पूरा करने के लिये तैयार हूँ। रानी ने कहा कि तू कहती है कि तू कार्य कर सकेगी। दासी ने सोचकर कहा कि महारानीजी ! आप मुझ पर विश्वास रखो। मेरे से जहां तक बनेगा मैं आज्ञा का पालन करूँगी। तब रानी अपनी भावी आशा पर फूली नहीं समाई और वह भविष्य की सुन्दर कल्पना करने लगी। तत्पश्चात् रानी व्यग्रता प्रकट करने लगी कि मैं उस नवयुवक पर तन-मन से मोहित हूँ। जब से मैंने उसे देखा है तभी से वह मेरी नजरों में समा गया है। मेरा हृदय उस पर न्योंछावर हो रहा है। बस, तू ऐसा प्रयत्न कर कि वह सुन्दर सेठ मेरे पास आवे, अन्यथा मेरा जीवन व्यर्थ है। ध्यान रहे यह गुप्त बात तेरे सिवाय अन्य कोई नहीं जान पाये अन्यथा

कहकर रानी चुप हो गई।

दासी फूलकर फुग्गा हो गई। उसने विचार किया कि मेरा भाग्य भी चमक जायेगा। मैं मालामाल हो जाऊंगी। काम से पीड़ित रानी मेरे चुंगल में फंस गई है। ऐसा विचारकर वह रानी से कहने लगी कि तुम इतनी छोटी सी बात में क्यों परेशान होती हो? बात ही बात में मैं तुम्हारे दिल के अरमान पूरे कर दूंगी। संसार में ऐसी कौनसी वस्तु है कि जो तुमको नहीं मिल सकती? तुम विश्वास रखो घबराओ नहीं। तुम्हारे मन की मुराद अवश्य पूर्ण होगी और शीघ्र ही होगी।

इधर सेठ सुदर्शन ने श्रावक के व्रत धारण किये थे। वह संसार में रहता हुआ भी उससे मुक्त होना चाहता था - इस कारण वह कभी ध्यान में लीन होजाता था। वह अष्टमी तथा चौदस को श्मशान भूमि में जाता था। रात्रि के समय वह श्मशान में जाता और ध्यानमग्न हो जाता था। इधर रानी की दासी तो सुदर्शन से एकान्त में मिलने का मौका ढूंड रही थी, वह मौका उसे मिल गया। सबसे पहले उसने चोकीदारों पर रौब जताने के लिये एक षड़यन्त्र रचा। उसने कुम्हार के पास से मनुष्य के आकार की एक विशाल मूर्ति बनवाई। एक दिन एक घटना बनी कि वह उस मूर्ति को महल में ले जाने लगी जब चौकीदार ने उसे अन्दर नहीं जाने दिया तो दासी ने गुस्से में आकर मूर्ति फेंक दी जिससे मिट्टी की वह मूर्ति टूट गई। अब दासी क्रोधपूर्ण कठोर शब्दों में कहने लगी कि दुष्टों ! तुमको पता नहीं है कि महारानीजी ने नर व्रत धारण किया है, जिसमें नर के समान मिट्टी के पुतले की आवश्यकता होती है, मैं उसे ले जाती थी, परन्तु तुमने उसे तोड़ दिया। अब महारानीजी का व्रत किस प्रकार पूरा होगा ? रानी भोजन के बिना रहेगी। मैं अभी जाकर तुम्हारी शिकायत करती हूँ। तुम्हें दण्डित कराकर तुम्हारे दुष्कर्मों का बदला लेती हूँ।

चौकीदार भयभीत हो गया। वह दासी से क्षमा याचना करने लगा कि तुम महारानी से कहकर दण्ड मत दिलवाओ। दासी ने कहा कि अच्छा, इस समय तो तुम्हें क्षमा करती हूँ। यद्यपि तुमने अपराध तो बहुत बड़ा किया है, परन्तु तुम्हारी हालत देखकर मुझे दया आती है। अब फिर से ऐसी भूल मत करना। मुझे किसी वस्तु अथवा महारानीजी के नरव्रत की पूर्ति के लिये किसी मनुष्य की जरूरत पड़े तो तुम लोगों ने विघ्न डाला तो क्या होगा पता है? चौकीदारों ने कहा कि इस समय क्षमा करो, दूसरी बार तुम्हारे कार्य में माथा नहीं मारेंगे। तुम आने-जाने के लिये स्वतंत्र हो। दासी ने क्रोध करके कहा कि इस समय तो क्षमा करती हूँ, आगे से ध्यान रखना, ऐसी भूल करके हमारे कार्य में विघ्न मत डालना। मैं रानी का व्रत पूर्ण करने

के लिये मिट्टी का पुतला लेने जाती हूँ अथवा जैसी आवश्यकता होगी वैसा करूँगी- ऐसा कहकर दासी श्मशान में पहुंच गई। वहां जाकर उसने देखा कि तपस्वी सुदर्शन ध्यान में लीन है। श्मशान भूमि भयंकर होती है। इसी भयंकर स्थान में तपस्वी सुदर्शन कायोत्सर्ग में लीन थे। बस, दासी को अच्छा सुयोग मिल गया, वह फूली नहीं समाई। उसने उसी समय तपस्वी सुदर्शन को उठाकर रानी के महल में पहुंचा दिया।

जब रानी ने सुदर्शन को अपने कक्ष में देखा तो वह अत्यन्त प्रसन्न हुई। उसने मन में विचारा कि मेरी मनोकामना पूर्ण हुई ,उसने कामवासना से पीड़ित होकर सेठ सुदर्शन से कहा कि हे प्रिय ! मेरी मनोकामना पूर्ण करो ! अपने, प्रेमालिंगन से मुझे सुखी करो। देखो, तुम्हारे लिये मुझे कितनी तकलीफ झेलनी पड़ी है। अब आनन्द से सुख क्रीड़ा करके जीवन सार्थक बनाओ। परन्तु सेठ सुदर्शन टस से मस नहीं हुआ।

संसार में ऐसे जितेन्द्रिय तपस्वी आदर्श सदाचारी कहां मिलेंगे ? रानी की अनेक प्रकार की कुचेष्टाओं से भी ब्रह्मचारी सुदर्शन का मन विचलित नहीं हुआ। इस कष्ट को दूर करने के लिये सेठ जिन भगवान का स्मरण करके प्रार्थना करने लगा। उसने मन में निश्चय कर लिया कि यदि मेरे सदाचार की रक्षा हो तो संसार का परित्याग करके दीक्षा लेलूंगा, इस संसार के झमेले में नहीं पड़ूँगा। इस प्रकार दृढ़निश्चय करके ध्यानमग्न हो गया। धन्य है सुदर्शन ! आपकी जितनी प्रशंसा की जाये कम ही कम है। भला ऐसा कौन ब्रह्मचारी होगा जो सुन्दरियों द्वारा अनेक प्रकार की विनती करने पर भी ठुकरा दे ? संसार से उदासीन होकर ब्रह्मचर्य की रक्षा करके सुन्दरियों के बाहुपाश से बचकर अपने सदाचार की रक्षा करना तपस्वी सुदर्शन का ही कार्य है।

रानी अपने लाख प्रयत्न करके थक गई, परन्तु सुदर्शन का व्रत भंग नहीं हुआ। रानी अपनी वासना पूर्ण नहीं होने से लज्जित होने से सेठ सुदर्शन को फंसाने के लिये षड़यंत्र रचने लगी। वह अपने शरीर पर नख द्वारा जख्म करके हा-हू करने लगी- "अरे ! दौड़ो, बचाओ, पापी के हाथों से बचाओ।" बस, उसका दूसरा षड़यंत्र सफल हो गया। तपस्वी सुदर्शन को महल में ही पकड़ लिया और पकड़कर महाराज के सामने पहुंचा दिया। देखा स्त्री चरित्र! थोड़े समय पूर्व क्या बात थी और क्या हो गया ? दुराचारी रानी ने सफल न हाने से निर्दोष ब्रह्मचारी सुदर्शन को बन्दी बना दिया। महाराज ने सुदर्शन की कथा सुनकर अत्यन्त क्रोधित होकर उसे फांसी की सजा सुना दी।

यहाँ महाराज का हुक्म हुआ-"दुष्ट पापी को मार दो।" जल्लाद तपस्वी सुदर्शन को

मारने के लिये श्मशान भूमि में ले गये। ज्यों ही उसे मारने के लिये जल्लादों की तलवार उठी परन्तु सुदर्शन की गर्दन पर वार खाली गया। तलवार सुदर्शन की गर्दन पर फूल की तरह पड़ी। सब आश्चर्यचकित हो गये। उसी समय आकाश में से देवों ने तपस्वी सुदर्शन की जय-जयकार बुलाते हुए पुष्पवृष्टि की और इस प्रकार स्तुति की- 'तपस्वी तू धन्य है ! आज संसार में तेरे समान कोई भी जिनभक्त नहीं है, तुम्हारा ब्रह्मचर्य व्रत अतुलनीय है, तुम्हारा हृदय सुमेरु के समान अचल है, तुमने अखण्ड ब्रह्मचर्य से अलोकिक कार्य किया है जिसकी उपमा तीन भुवन के इतिहास में नहीं मिलती।'- इस प्रकार देवों ने पुष्पवृष्टि की और श्रद्धा भक्ति से उनकी पूजा की। इधर सेवकों ने महाराज को तपस्वी सुदर्शन के प्रभाव का वर्णन जाकर सुनाया। महाराज ने विलम्ब न करते हुए शीघ्र ही तपस्वी के समीप पहुंचे और उन्होंने अपने अपराध की क्षमा याचना की।

इस घटना से सुदर्शन के हृदय में अत्यन्त विरक्त भाव उत्पन्न हो गया। उन्होंने तुरन्त अपने पुत्र सुकान्तवाहन को घर का भार सौंपकर, संसार पूजित विमलवाहन महामुनि के समीप जाकर जिन दीक्षा अंगीकार कर ली।

राजा के भय से रानी ने अपघात कर लिया और दासी भागकर पटना पहुंच गई। वह पटना की समस्त गणिकाओं और नगर की स्त्रियों को अपने स्वदेश त्याग की कथा और सुदर्शन की कथा कहती है और प्रतिदिन अपनी निन्दा और गर्हा करती हुई देवदत्ता वैष्या के यहाँ रहने लगी। पटना की जनता भी दासी की बात सुनकर मन में बहुत आश्चर्य करती है। इससे वहाँ के जन समूह को सुदर्शन मुनि के दर्शन के लिये उत्साहित कर दिया जिससे वे बहुत ही जिज्ञासा से उनके दर्शन की प्रतीक्षा करने लगे।

एक समय की बात है कि अत्यन्त धीर आत्मा सुदर्शन मुनि विहार करते-करते पटना आ पहुंचे। सुदर्शन मुनि का शरीर अनेक प्रकार के उपवासों के कारण जीर्ण हो गया। एक दिन दासी ने मुनि को पारणा के लिये राजमार्ग से आते देखा, वह देवदत्ता वैश्या से कहने लगी हे सुन्दरी ! जिस मानव आत्मा के कारण मैं नष्ट हुई उस साधु को तो देख !

दासी की बात सुनकर देवदत्ता कहने लगी कि पण्डिता ! महादेवी और कपिला में से कोई भी कामशास्त्र की पण्डिता नहीं थी, न कामकला विशारद थी और न मनुष्य के मन की पारखी थी, तू देख, मैं अभी तुरन्त ही इस मुनि के चित्त को मोहित करती हूँ।

इस प्रकार दासी से कहकर देवदत्ता ने अपनी नोकरानी को बुलाकर उससे कहा कि तू जा और इन मुनिराज से कह कि हे भगवन् ! आज आप हमारे घर भोजन करो। नोकरानी

की प्रार्थना से मुनिराज देवदत्ता के घर पधारे। जहां मुनिराज देवदत्ता के घर आये कि उसने तुरन्त ही दरवाजा बन्द कर दिया और तीन-तीन दिन तक मुनिराज पर भयंकर उपसर्ग किया, परन्तु इस समय मुनिराज ने अपने मन को इतना आत्म सन्मुख कर दिया कि जिससे वे लकड़ी के अथवा मिट्टी के अथवा पत्थर के समान निश्चल हो गये। उस समय देवदत्ता ने अपने सैंकड़ों हाव-भाव, चेष्टा से विकार बताया, परन्तु सुदर्शन मुनि का चित्त जरा भी मोहित नहीं हुआ। जब देवदत्ता ने देखा कि मुनिराज इतने हाव-भाव दिखाने पर भी इतने स्थिरचित्त, गम्भीर और गुण सागर रहे हैं- यह जानकर उसको बहुत भय हुआ और वह अपने दूषित अभिप्राय की निन्दा करने लगी और रात्रि होते ही मुनिराज को श्मशान में छोड़ आई और अपना काला मुंह लेकर वापस घर आ गई।

सुदर्शन मुनि जैसे ही भयंकर श्मशान भूमि में पहुंचे उन्होंने चारों प्रकार के आहार का त्याग कर दिया, रात्रि में कायोत्सर्ग करके स्थिर हो गये। वहां रानी महादेवी अभय का जीव जो मरकर व्यंतरी हुई थी उसने सुदर्शन मुनि को पहिचान लिया और लगातार सात दिन तक उनके ऊपर भयंकर उपसर्ग किया। सात दिन के पश्चात् मुनिराज ने श्रेणी मांडकर घातिकर्मों का क्षय किया और समस्त पदार्थों को साक्षात करने वाला केवलज्ञान प्रगट किया। केवलज्ञान प्रगट होते ही देवों का समूह स्तुति वंदना करने के लिये आने लगा। तब वैश्या देवदत्त, दासी, व्यंतरी और समस्त नगरवासी जनता अत्यन्त भक्ति से केवली के पास आये और भगवान धर्मोपदेश देने लगे कि जो मानव शरीर पाकर धर्म नहीं करता वह निधि पाकर भी अन्धा है- इत्यादि विस्तार पूर्वक धर्मोपदेश दिया।

पूर्व कथित व्यंतरी, देवदत्ता वैश्या, दासी और उपस्थित जनता सुदर्शन केवली का धर्मोपदेश सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। कितने ही जीवों ने भक्ति ने श्रावक के व्रत धारण किये, कितने ही जीवों ने सम्यक्त्व धारण किया और कितने ही ने संसार से विरागी होकर समस्त परिग्रह छोड़कर मुनिदीक्षा अंगीकार की।

केवली सुदर्शन ने देशान्तर में विहार करके धर्मोपदेश दिया और अन्त में समस्त कर्मों का नाश करके मोक्ष पधारे।

इस प्रकार सुदर्शन मुनिराज, जो पूर्व भव में सुभग ग्वाला थे वे जिनेन्द्र भगवान के नमस्कार के फल से शाश्वत् निर्वाण पद को प्राप्त हुए।

-वृहद् कथाकोष भाग-२ में से संक्षिप्त सार